CHAPTER 3, आलो-आँधारि
PAGE 58, अभ्यास

11:1:1: अभ्यास:1

1. पाठ के किन अंशों से समाज की यह सच्चाई उजागर होती है कि पुरुष के बिना स्त्री का कोई अस्तित्व नहीं है। क्या वर्तमान समय में स्त्रियों की इस सामाजिक स्थिति में कोई परिवर्तन आया है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर : हमारे समाज में पुरुष के बिना, महिला का कोई अस्तित्व नहीं है, समाज की यह सच्चाई पाठ के निम्नलिखित भागों से पता चलती है:

1. "मुझे उस घर में बच्चों के साथ अकेले रहते हुए देखकर, सभी लोग पूछते थे कि क्या आप यहाँ अकेले रहती हैं? आपके के पति कहाँ रहते है? आप

यहाँ कितने समय से हैं? आपका स्वामी यहाँ क्यों नहीं रहता है? आप यहाँ क्या करती हो क्या आप यहाँ अकेले रह पाओगे समाज की ऐसी बातों को सुनने के लिए कोई भी खड़ा नहीं होना चाहेगा। बच्चों को साथ ले कर मैं उसी समय काम खोजने निकल जाती।

2. अगर किसी दिन घर पहुँचने में देरी होती, तो मकान के मालिक की औरत पूछने आती कि इतनी देर क्यों हो गई!

3. अगर कभी उसके यहां से लौटने में देर हो जाती, तो हर कोई मेरी तरफ ऐसे देखता जैसे मैं कोई अपराध कर के आ रही हूं ! यहां तक कि अगर मुझे बाजार में कोई वस्तु भी खरीदने जाना होता था, तो मकान मालिक की महिला कहती थी, " हर दिन कहां जाती है?" तेरा तो स्वामी है नहीं , तुम अकेली हो।फिर तुम्हे इतना घूमने आवश्यकता क्यों है? “मैं सोचती थी , अगर मेरा स्वामी मेरे साथ नहीं है, तो

क्या मैं कहीं भी नहीं घूम सकती और जब वो मेरे साथ था तब भी मुझे क्या मिला ,साथ में रहने के बाद भी मुझे शांति तो मिली नहीं ? उसके बावजूद मैंने पाड़े के लोगों की क्या - क्या बातें नहीं सुनीं।

4. जब मैं काम पर जाती थी , तो आसपास के लोग एक-दूसरे से कहते थे कि इस लड़की का स्वामी यहां नहीं रहता है, वह किराए के घर में बच्चों के साथ अकेली रहती है। दूसरे उनकी बातें सुनकर मुझे बहकाना चाहते , वे मुझसे बात करने की कोशिश करते हैं। पानी पीने के बहाने मेरे घर तक आ जाते ।

5. जब मैं बच्चों के साथ कहीं जाती थी, तो लोग बहुत सी बातें करते थे, मुझे देख कर कितने सिटी बजाते , कितने लोग ताना मारते थे।

6. मुझे लगा कि क्या ये सब इतना आसान है। घर में कोई आदमी नहीं है, तो क्या इसलिए मुझे सब से सबकुछ स्वीकार करना पड़ेगा । वर्तमान समय में

महिलाओं की सामाजिक स्थिति में बहुत बदलाव आया है। वे अपने पैरों पर खड़ी हैं और कई तरह के काम करती हैं। महानगरों में, तो कितनी अविवाहित महिलाएं अकेले रहती हैं और अपना जीवन जी रही है। हाँ कुछ मनचले उन्हें छेड़ने की कोशिश जरूर करते हैं। लेकिन बहुत से लोग उन्हें सम्मान भी देते हैं और उन्हें कभी अपमानित नहीं करते।

11:1:1: अभ्यास:2

2. अपने परिवार से तातुश के घर तक के सफ़र में बेबी के सामने रिश्तों की कौन-सी सच्चाई उजागर होती है?

उत्तर : पति से और अपने परिवार से रिश्ता टूटने के बाद अपनों से लेकर तातुश के घर तक, बेबी ने रिश्ते की सच्चाई जानी। उसने जाना कि रिश्ते दिल से जुड़े होते हैं, अन्यथा रिश्ते में दरार पड़ जाती है।

पति के घर से चले जाने के बाद वह अकेली और असहाय थी। वह बच्चों के साथ किराए के घर में अकेले रहने लगी। वह खुद काम खोजने लगी थी। हालाँकि भाई और रिश्तेदार उसके पास रहते थे, फिर भी किसी ने उसकी मदद नहीं की। वे उससे मिलने भी नहीं आए। उन्हें अपनी माँ की मृत्यु की खबर छह महीने बाद अपने पिता से मिली। दूसरी ओर, बाहरी लोगों ने उनकी सहायता की। सुनील नाम के एक युवक ने उससे काम दिलवाया और तातुश ने उसे अपनी बेटी की तरह माना और उसकी हर तरह से मदद की। उसके प्रोत्साहन से वह लेखिका बन गई। घर टूट जाने के बाद, भोला दा पूरी रात उसके साथ खुले आसमान में बैठे रहे। इस तरह दिल में स्नेह होने पर रिश्ते बनते हैं।रिश्तो में स्नेह और मदद की भावना होनी चाहिए जो उसने तातुश और बाहरी लोगो से सीखा।

11:1:1: अभ्यास:3

3. इस पाठ से घरों में काम करने वालों के जीवन की जटिलताओं का पता चलता है। घरेलू नौकरों को और किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस पर विचार करिए।

उत्तर : इस पाठ से घर पर काम करने वालों के जीवन में निम्नलिखित जटिलताओं और घटनाओ का पता चलता है:

1. घरेलू नौकरी में वित्तीय सुरक्षा नहीं मिलती है। उनकी नौकरियां कभी भी खत्म हो सकती हैं।

2. उन्हें गंदे और सस्ते घरों में रहना पड़ता है, क्योंकि वे ज्यादा किराया देने में सक्षम नहीं होते हैं।

3. मालिक के घरो में इन लोगों का शारीरिक शोषण भी होता है। नौकरानियों को अक्सर शोषण का शिकार होना पड़ता है।

4. दुसरो के घरो में काम करने वाली औरतो के प्रति आम लोगों लोगों का व्यहार आपत्तिजनक होता है।

5. कई बार काम समय से ज्यादा समय तक करना पड़ता है, त्योहार के दौरान लोग उन्हें लंबे समय तक रोकते हैं ताकि वे त्योहार को अच्छे से मना सकें, भले ही काम करने वाली का त्योहार बर्बाद हो जाए।

6. दूसरे घरो में काम करने वाली औरतो के बच्चों को पर्याप्त भोजन, और शिक्षा नहीं मिल पाती उन्हें बीमारी के अलावा कुछ नहीं मिलता है। उन्हें भी कम उम्र से ही कहीं काम करना पड़ता है।

11:1:1: अभ्यास:4

4. आलो-आँधरि रचना बेबी की व्यक्तिगत समस्याओं के साथ-साथ कई सामाजिक मुद्दों को समेटे है। किन्हीं दो मुख्य समस्याओं पर अपने विचार प्रकट कीजिए ।

उत्तर :" आलो-आंधारि" लेखक की आत्मकथा है, लेकिन इसके साथ ही, लेखक हमें एक अनोखी दुनिया भी दिखाती है ऐसी दुनिया जो हमारे पड़ोस में रहती है फिर भी हम इसमें ताक - झाक करना असंवेदनशील मानते हैं। इस पाठ में दो प्रमुख समस्याएं निहित हैं:

(क) परित्यक्त महिला की स्थिति - इस रचना में बेबी एक परित्यक्त महिला है, वह किराए के घर में रह रही है, और लोगों के घर में काम कर रही है। उसके प्रति लोगों का व्यवहार बहुत रूखा और कड़वा होता है। उसका दर्द खुद महिला को भी है। कि उसे

समझने के बजाय उस पर ताना मारा जाता है। हर व्यक्ति अकेली औरत को असहाय समझता है और उसका शोषण करना चाहता है। उसका मानसिक, शारीरिक और आर्थिक रूप से शोषण किया जाता है। उस पर आरोप लगाए जाते है।और जल्दी कोई उसकी सहायता के लिए पास नहीं आता।

(ख) गंदी बस्तियाँ - इस पाठ में मलिन बस्तियों और उसके आसपास के क्षेत्रों पर खुलकर चर्चा की गई है। ये बस्तियाँ निचले तबके में रहने वाले लोगों की है यहाँ गरीब लोग रहते हैं, यहाँ शौचालय की सुविधा भी नहीं है। महिलाओं को इस मामले में काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। गन्दी नालियों और कचड़ो आदि के पास स्थित इन बस्तियों में कई बीमारियाँ फैलने का डर है। सरकारें भी अपनी आँखें बंद रखती हैं।

11:1:1: अभ्यास:5

5. तुम दूसरी आशापूर्णा देवी बन सकती हो - जेठू का यह कथन रचना संसार के किस सत्य को उद्‌घाटित करता है?

उत्तर: जेठू के इस कथन में कहा गया है कि परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी आपके प्रतिकूल क्यों न हों, मनुष्य की इक्छाशक्ति अगर प्रबल है तो वो अपनी इच्छा से लक्ष्य प्राप्त कर लेता है। आशापूर्णा देवी एक सामान्य गृहिणी थीं, जो पूरे दिन घर के कामों में व्यस्त रहती थीं, लेकिन उन्हें लेखन में रुचि थी। जब पूरा परिवार सोता था, तब वह लिखती थी और लिखकर विश्व प्रसिद्‌ध कथाकार बन गई। हाँ ये बात है कि उनकी अपेक्षा बेबी के हालत खराब है। वह वित्तीय संकट से जूझ रही है, लेकिन अगर वह लगातार लिखती रहेगी तो अपने

लिखने की शैली को बेहतर बना सकती है अगर वो इस व्यस्त जीवन से कुछ समय निकाल पाए तो वो अपने आप को एक प्रसिद्ध लेखिका में बदल सकती हैं।

11:1:1: अभ्यास:6

6. **बेबी की जिंदगी में तातुश का परिवार न आया होता तो उसका जीवन कैसा होता? कल्पना करें और लिखें।**

उत्तर: तातुश के परिवार के संपर्क में आने से पहले बेबी का जीवन बहुत परेशानियों से भरा था। लेकिन जब से बेबी तातुश के परिवार से मिली उसे भोजन, आवास आदि की समस्याओं से राहत मिल गयी और उसने अपने बच्चों का पालन-पोषण किया। यदि तातुश का परिवार उसके जीवन में ना होता तो उसका जीवन नरकीय होता। उसके बच्चों को अच्छी

शिक्षा भी नहीं मिल पाती। उसके बच्चे या तो कहीं भटकते या किसी के घरों में काम कर रहे होतें। बेबी को भी समाज के आवारा लोगों द्‌वारा शोषण का शिकार होना पड़ता और लोगों के अपमानजनक व्यवहार का सामना करना पड़ता। उसका बड़ा लड़का शायद ही उसे मिल पाता , उसके पिता भी उसे याद नहीं करते और इस तरह से माँ की मृत्यु की खबर भी उसे नहीं मिल पाती। उसका और उसके बच्चे का जीवन चुनौतीपूर्ण और धूमिल हो जाता।